SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: Now the *viplav* is contained.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: No, *viplav* has now been highlighted.

RE: HIKE IN SECURITY DEPOSIT FOR LPG CYLINDERS

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश): श्रीमन्, मैं एक आम आदमी की तकलीफ, जो सरकार की कार्रवाई से बढ़ी है, उसकी ओर सदन का और सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

एल०पी०जी०, जिसे आम तौर पर घरेलू गैस कहा जाता है खाना बनाने की, उसके ऊपर जिसे डिपॉज़िट कहते हैं, वह दुगुने से ज्यादा कर दिया गया है। पहले 400 रुपए और रेगुलेटर के लिए 50 रुपए यानी 450 रुपए डिपॉज़िट लिया जाता था, आज उसे बढ़ाकर 900 और 100 यानी पूरे 1,000 रुपए कर दिया गया है। कहा यह जाता है कि डिपॉजिट है, लेकिन शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा होता है जिसने गैस लिया हो और वह अपना पैसा वापिस लेता हो—या तो दुर्भाग्य से मर जाए या उसको गैस की आवश्यकता न रहे तो हो सकता है, लेकिन ऐसा होता नहीं है।

2.00 P.M.

तो नॉन-डिपोजिट है, वास्तव में वह पैसा जाता है जहां पर से सूद वसूल होता है और सामान्यतः एक डीलर को चलाने के लिए तीन हजार, चार हजार कनैक्शन देने पड़ते हैं और एक हजार रुपया जमा करने के बाद इस प्रकार 30 लाख, 40 लाख रुपया उस पर पहुंच गया। इसका सूद सरकार लेती है और उस सूद में से कमीशन देती है। तो इनडायरेक्ट में होता क्या है, यह पैसा सरकार के पास जाएगा। दूसरे इसका एक पहलू और है कि अब सरकार निजी कम्पनियों को गैस मंगाने और बेचने का अधिकार दे रही है और अब गैस शहर से, कस्बे से आगे बढ़कर छोटे टाउनशिप में और गांव में जा रही है। दिल्ली में रहने वाले के लिए है जो मध्यम श्रेणी का आदमी है, मैं मानता हूं कि मध्यम श्रेणी के व्यक्ति की तीन हजार या चार हजार रुपए तनख्वाह होगी या इसकी इतनी आमदनी होगी। तो इतनी आमदनी वाला भी मुश्किल से हजार रुपया निकाल सकता है। लेकिन जिसकी हजार, बारह सौ रुपया तनख्वाह है, तो उसके लिए तो यह असंभव है। तो मेरा अनुरोध है कि सरकार को इस बात पर विचार करना चाहिये और इसको वापिस ले, नहीं तो घटाया जाना चाहिये। इसके साथ एक बात और जुड़ी है सिलेंडर की कॉस्ट कितनी होती है? क्या सिलेंडर निजी कम्पनियां बना रही हैं? अगर सिलेंडर की कॉस्ट कम है और पैसा ज्यादा लिया जाता है तो सरकार फिर कमा रही है। फिर निजी कम्पनियां आ रही हैं, तो सरकार ने कह दिया कि — तुम भी इससे कम मत लो। ज्यादा लेंगे। इसका मतलब है कि निजी कम्पनी ने किसी को डीलरशिप दी, 30 लाख, 40 लाख रुपया उस निजी कम्पनी के पास जाएगा और उसमें 10 हजार, 15 हजार, 20 हजार रुपया ज्यादा से ज्यादा वह कम्पनी उस डीलर को दे देगा। यह एक कमाई है। तो यह एक प्रकार से पूरा अत्याचार है।

अब एक और रिवाज हो गया है। कुछ लोग मेरे पास आते हैं तथा मेरे जो साथी हैं उनके पास भी गैस का कूपन लेने आते होंगे। यहां के एकाध कर्मचारी हैं, वह कहते हैं कि साहब, दे दीजिए, क्योंकि मेरी लड़की की शादी है और लड़की की शादी में मुझसे यह दहेज में मांग रहे हैं। तो जहां अब तक दहेज में और चीजें मांगी जाती थीं अब उसमें यह चीज भी दहेज में जुड़ गई।...(**व्यवधान**)

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: बैचलर को तो इससे बहुत ही परेशानी है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: बात सच कह रहे हैं। इससे दो परेशानी हैं। एक परेशानी यह है कि मुझे किसी की शादी नहीं करनी है। लेकिन अगर मेरी शादी की इच्छा हो जाए तो मुझे दहेज में कौन देगा।

श्री हंसराज भारद्वाज: आपके दहेज में हम दे देंगे।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: यह मजाक की बात नहीं है।...(**व्यवधान**) इन्होंने मजाक किया है तो मैं इनके मजाक का जवाब दे दूं। एक सज्जन बूढ़े थे। उन्होंने शादी करली। लोगों ने उनसे पूछा कि आप गंजे क्यों हो रहे हो? उन्होंने कहा कि जो नई बीबी है वह मेरे सफेद बाल उखाड़ देती है और जो पुरानी बीबी है वह काले बाल उखाड़ देती है, इसलिए गंजा हो रहा हूं। तो लिहाजा शादी का इस उम्र में कोई तकाजा नहीं है। मौलाना, करलें, दूसरे करलें। आपको चार शादी एलाउड है, हजूर। अभी तीन और कर लो।

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी: अगले जन्म में आपकी भी हो जाएगी।

†[مولانا عبیداللہ خان اعظمی: اگلے ہفتہ میں ایسی بھی ہو جائیگی ۔]

श्री जगदीश प्रसाद माथुरः लिहाजा मेरा कहना यह है कि सरकार ने एक हजार रुपया करके आम आदमी के साथ अन्याय किया है। इसका असर यह होगा कि कस्बे का आदमी और गांव का आदमी तो गैस रखने के काबिल, रहेगा ही नहीं। सब इससे सहमत हैं। मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि एक हजार को अगर 450 रुपए पर नहीं ला सकते तो ज्यादा से ज्यादा 500, 600 बढ़ा दीजिए और आप जो उसका सूद कमाते हैं, जो इंटरेस्ट लेते हैं उस इंटरेस्ट में जितना पैसा देना हो दीजिए। मैं समझता हूं हमारे पार्लियामेंट्री एफ्फेयर्स मिनिस्टर बैठे हैं। सतीश शर्मा जी से कहिये। कल उन्होंने बहुत अच्छा किया, बहुत लोगों को पैसा दिया। नाम दिए, न दिए, लेकिन हमारी तरफ से यह निवेदन करदें कि जो हजार रुपया कर दिया, इसको कम से कम घटा कर इसको आम आदमी की सीमा के भीतर किया जाए।

श्री राघवजीः मैं माथुर जी की बात से अपने आप को संबद्ध करता हूं। उनको ही जब इतनी तकलीफ हो रही है तो हम तो भुगत रहे हैं। हम समझ रहे हैं इस बात को कि कितना कष्ट होता है गृहस्थ व्यक्ति को और इसलिए माननीय मंत्री जी से निवेदन है कि यह सिक्योरिटी डिपॉज़िट जो है, वह पुराना वाला ही कर दें।...(व्यवधान)...

श्रीमती मीरा दासः इसलिए कि प्राइवेट कंपनी में ज्यादा डिपॉज़िट है। लोग प्राइवेट नहीं ले रहे हैं और मांग रहे हैं, इसलिए इसको बढ़ाया जा रहा है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुरः प्राइवेट डिपॉज़िट वाले तो ज्यादा गैस दे ही नहीं रहे हैं, अभी पैसे जमा कर रहे हैं।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. BIBLAB DASGUPTA): Shrimati Jayanthi Natarajan, she is not here. Shrimati Mira Das.

RE: UNUSUAL DELAY OF THE RAJDHANI EXPRESS RUNNING BETWEEN DELHI AND BHUBANESWAR DUE TO VIPs.

श्रीमती मीरा दास (उड़ीसा): धन्यवाद वाइस चेयरमैन सर। अगर हमारी डिक्शनरी में कोई वी॰आई॰पी॰ की परिभाषा होती है तो हम जानते हैं कि प्रेज़ीडेंट, वाइस प्रेज़ीडेंट, प्राइम मिनिस्टर, मिनिस्टर्स होते हैं लेकिन हमारे देश में यह परिभाषा अब कुछ बदल गई है। कोई भी अपने को वी॰आई॰पी॰ कह कर कुछ भी कर सकता है। मैं यह इसीलिए कहती हूं कि कुछ दिन पहले हमारे यहां एक भयंकर ट्रेन दुर्घटना हुई है और जितने दिन अभी हम हैं इस संसार में, इस दुर्घटना को कभी भूल नहीं पाएंगे जितनी भयंकर यह दुर्घटना हुई है। लेकिन इसमें हमारे उड़ीसा के जितने लोग थे, वे बोल रहे थे कि पुरुषोत्तम ट्रेन जिसका शेड्यूल्ड टाइम, जो निर्धारित समय था, वह निर्धारित समय से कुछ पीछे चल रही थी लेकिन इसकी वजह यह है कि कोई वी॰आई॰पी॰ की गाड़ी आगे चल रही थी इसलिए पुरुषोत्तम ट्रेन को रुकना पड़ा जिसके तहत हम देखते हैं कि यह दुर्घटना हुई। अगर पुरुषोत्तम ट्रेन अपने निर्धारित समय से चलती तो मेरे हिसाब से कम से कम इस दुर्घटना से बचा जा सकता था। हमारे एक बड़े मंत्री जी थे जिनका नाम मैं बोलना नहीं चाहती थी, नहीं बोलती लेकिन I will not do justice to myself. तो वह प्रणब मुखर्जी जी थे। सच है कि झूठ है यह मैं नहीं जानती। जो लोग ट्रेन में थे, उन्हीं के कहने पर मैं बता रही हूं। इनकी ट्रेन को आगे जाने दिया गया इसलिए पुरुषोत्तम को रोक दिया गया और जिसका नतीजा यह हुआ कि ट्रेन का ऐक्सीडेंट हुआ । ऐसा ही कहते हैं लोग, हमने नहीं देखा है, जो इस ट्रेन में आए हैं, वे ही बोल रहे थे।

और भी एक गाड़ी की बात मैं कर रही हूं। भुवनेश्वर से नई दिल्ली एक गाड़ी चलती है। राजधानी ऐक्सप्रेस, फास्टेस्ट ट्रेन है। जो यह एक्सीडेंट की वजह से लेट हो रही थी और इस में कोई वी-आई-पी को आना था जिसकी वजह से, लोगों का कहना है कि 15-20 बार ट्रेन की चेन खींचनी पड़ी और गाड़ी को रोकना पड़ा क्योंकि वी॰आई॰पी॰ पता नहीं किस जगह से किस जगह चढ़ जाए, इसलिए गाड़ी को रोकना पड़ा जिसकी वजह से छह-सात घंटे गाड़ी और भी लेट हो गई। जिस ट्रेन को संडे वहां से निकल कर मंडे को पहुंचना था, वह ट्यूज़डे मॉर्निंग को पहुंची, लेट होने की वजह से एक तो they were very much in distress.लोगों में जोश भी था। खैर जब वी॰आई॰पी॰ स्टेशन में आए तो जो लोग ट्रेन में थे, उन्होंने वी॰आई॰पी॰ की इतनी पिटाई

†Transliteration in Arabic scirpt.